aglasem.com

FOR MP CPCT EXAM PREPARATION

MP CPCT 2016 Question Paper · Hindi Typing

EXAM	YEAR	TYPE	SUBJECT	DATE
MP CPCT	2016	Question Paper	Hindi Typing	28 Feb 2016

SHIFT
Shift 3

Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Inscript 28th Feb Shift 3
Subject Name:	Inscript
Creation Date:	2016-02-28 13:04:57
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	55813929
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	55813929
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	55813929
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 55813929 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था। एक दिन उसने बारासिंघ का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा। अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Inscript

Actual

Group Number :	2
Group Id :	55813930
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Mandatory Break time:	No
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	55813930
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	55813930
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 55813930 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

'यदि मैं तानाशाह होता तो विदेशी माध्यम द्वारा शिक्षा तुरंत बंद कर देता, जो अध्यापक इस परिवर्तन के लिए तैयार न होते उन्हें बर्खास्त कर देता, पाठ्य पुस्तकों के तैयार किए जाने का इंतजार न करता।' प्रयागनिवासी पिछले एक पखवारे से महात्मा गांधी के इन शब्दों को अपने नगर के अनेक स्थानों पर चिपके पोस्टरों पर लिखे देखते रहे हैं। उत्तर प्रदेश-शासन द्वारा जो 'भाषा विधेयक' विधानमंडल में प्रस्तुत हुआ था उसे ही इसका श्रेय दिया जाना चाहिए कि हम लोगों ने राष्ट्रपिता के इन शब्दों को याद करने-कराने की कोशिश की। शासन के इस प्रयास से जो चेतना जागृत हुई, स्वभाषा के अपमान की जो तीव्र प्रतिक्रिया हमारे मन में हुई, उसके फलस्वरूप ऐसा जान पडने लगा कि 'स्वदेशी आंदोलन' की तरह 'स्वभाषा आंदोलन' भी चल निकलेगा। प्रयाग ने इस स्वतःस्फूर्त अभियान में प्रदेश का नेतृत्व किया। एक सार्वजनिक सभा में विधेयक का विरोध किया गया और यह निश्चय किया गया कि विरोध को सक्रिय, सुसंघटित संघर्ष का रूप देने के लिए योजना-बद्ध कार्य किया जाए। एक 'हिंदी संघर्ष समिति' स्थापित हुई जिसके तत्वावधान में एक व्यावहारिक कार्यक्रम बना। निश्चित हुआ कि सितंबर 8 से एक 'विधेयक विरोधी सप्ताह' मनाया जाए जिसकी पूर्णाहुति हिंदी दिवस (14 सितंबर) को एक सार्वजनिक सभा के रूप में हो। आंदोलन की एक विवरणिका प्रकाशित हो, नगर के विभिन्न क्षेत्रों में सभाएं की जाएं, एक सबल संघात जनसमूह के मन और मस्तिष्क पर पडे। शासन ने विधान परिषद में अपने विधेयक को प्रस्तुत करने के पहले ही विचार बदल दिया। इसका श्रेय किसी एक व्यक्ति या वर्ग को देना गलत है : शासन का यह मत-परिवर्तन मूलत: सद्विवेक के सहसा जाग उठने का परिणाम था या संभाव्य जनविरोध की कल्पना का, यह कौन जाने। पर यह अस्वाभाविक नहीं था कि हिंदी वालों ने विधेयक की विभीषिका का हट जाना अपने अभियान की सफलता का प्रमाण माना। विधेयक के रद्द होने - या रद्द होना निश्चित हो जाने - के बाद 'विधेयक विरोधी सप्ताह' मनाने की जरूरत नहीं रही। यह सहज स्वाभाविक जान पडता यदि 'संघर्ष समिति' एक औपचारिक बैठक कर के शासन को बधाई देती और अपनी कार्यसिद्धि पर प्रसन्न होकर 'खेल खत्म' का नोटिस लटका कर, दरवाजे बंद कर देती। पर उसने किया कुछ और ही। उसने बधाई का संदेश तो मुख्य मंत्री के पास भेजा पर साथ ही यह भी निश्चय किया कि न अपना नाम बदलेगी न काम। विधेयक के विरोध में न सही, पर 'संघर्ष' जारी रखने की आवश्यकता अब भी थी - इस कारण समिति ने अपने कार्यक्रम को प्राय: पूर्ववत ही रखने का निश्चय किया। इसके अनुसार सप्ताह भर स्थान-स्थान पर सभाएं हुईं, पोस्टर चिपकाये गए, लेख लिखे-लिखवाये गए, हर प्रकार से एक व्यापक, जीवंत 'हिंदी आदोलन' के अस्तित्व का बोध कराने के लिए उसके उपयुक्त वातावरण बनाने की चेष्टा की गई। 'हिंदी दिवस' के दिन एक सार्वजनिक सभा श्री अमृतलाल नागर की अध्यक्षता में हुई जिसमें उपस्थित लोगों ने एक सामूहिक प्रतिज्ञा की कि हिंदी को उसका पद पूर्णरूपेण जब तक नहीं मिलेगा तब तक संघर्ष करते रहेंगे। सितंबर ८ से १४ तक (जिसे 'हिंदी सप्ताह' का नाम दिया गया था) जैसी सक्रियता परिलक्षित हुई थी यदि वैसी ही सक्रियता भविष्य में भी होती रही तो निश्चय ही एक ऐसी प्रेरक शक्ति उत्पन्न हो जाएगी जो जनभाषा को उसके अपेक्षित पद पर प्रतिष्ठित कराने में सफल होगी।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted

Paragraph Display: Yes

Evaluation Mode: Non Standard

Keyboard Layout: Inscript